राजपूतों की उत्पत्ति के संबंध में कई सिद्धांत प्रस्तुत किए गए हैं, जिनमें प्रमुख रूप से वैदिक-क्षत्रिय वंशज सिद्धांत, अग्निकुंड सिद्धांत, विदेशी मूल सिद्धांत, तथा मिश्रित जातीयता सिद्धांत शामिल हैं। इनमें से वैदिक-क्षत्रिय वंशज सिद्धांत को ऐतिहासिक, पौराणिक एवं जातीय प्रमाणों के आधार पर सबसे अधिक मान्यता प्राप्त है।

1. वैदिक-क्षत्रिय वंशज सिद्धांत (Traditional Kshatriya Descent Theory)

इस सिद्धांत के अनुसार, राजपूत प्राचीन वैदिक क्षत्रियों के ही वंशज थे। वैदिक साहित्य में वर्णित क्षत्रिय समुदाय का विकास कालांतर में राजपूतों के रूप में हुआ। इसके पक्ष में निम्नलिखित प्रमाण दिए जाते हैं:

- पुराणों एवं महाकाव्यों में उल्लेख: महाभारत, रामायण, एवं पुराणों में सूर्यवंशी और चंद्रवंशी क्षत्रियों का वर्णन मिलता है, जिनसे कई राजपूत वंशों ने अपना वंश जोड़ा है। जैसे, गुहिल (सिसोदिया) सूर्यवंश से और राठौड़ चंद्रवंश से संबंध रखते हैं।
- वंशावली प्रमाण: कई राजपूत वंश अपने को प्राचीन क्षत्रियों से जोड़ते हैं, जैसे चौहान, परमार, सोलंकी, और प्रतिहार। इनका उल्लेख पुराणों में भी है।
- क्षत्रिय धर्म एवं परंपरा: राजपूतों ने क्षत्रिय धर्म का पालन किया, जिसमें युद्ध-कला, धर्मरक्षा, और दानशीलता जैसे गुण प्रमुख थे। यह प्राचीन वैदिक क्षत्रिय संस्कृति से मेल खाता है।

2. अग्निकुंड सिद्धांत (Agnikula Theory)

यह सिद्धांत "प्रथ्वीराज रासो" (चंदबरदाई द्वारा रचित) पर आधारित है। इसमें कहा गया है कि चार प्रमुख राजपूत वंश— प्रतिहार, चौहान, परमार और सोलंकी—अग्निकुंड से उत्पन्न हुए थे।
हालांकि, इसे प्रतीकात्मक कथा माना जाता है, जिसमें यह दिखाया गया है कि इन वंशों ने विदेशी आक्रमणकारियों से भारत की रक्षा के लिए शक्ति प्राप्त की।

3. विदेशी मूल सिद्धांत (Foreign Origin Theory)

कुछ इतिहासकार, जैसे जेम्स टॉड, ने यह तर्क दिया कि राजपूत विदेशी मूल के थे और हूण, शक, कुषाण आदि जातियों से संबंधित थे। हालांकि, यह सिद्धांत विवादास्पद है क्योंकि:

- विदेशी आक्रमणकारी भारतीय समाज में घुलमिल गए और धीरे-धीरे क्षत्रिय संस्कृति को अपनाया।
- राजपूतों के रीति-रिवाज, युद्ध-नीति, और समाज संरचना वैदिक क्षत्रियों से मिलती है, विदेशी संस्कृति से नहीं।
- राजपूतों के वंश-वृक्ष और पारंपरिक कथाएँ उन्हें प्राचीन क्षत्रियों से जोड़ती हैं।

4. मिश्रित जातीयता सिद्धांत (Mixed Origin Theory)

कुछ इतिहासकारों का मानना है कि राजपूत विभिन्न जातीय समूहों (क्षत्रिय, ब्राह्मण, नाग, शक, हूण, आदि) के मेल से बने। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि वे गैर-क्षत्रिय थे, बल्कि वे भारतीय समाज में श्रेष्ठ योद्धा वर्ग के रूप में उभरे।

निष्कर्ष

इन सभी सिद्धांतों की समीक्षा करने पर यह स्पष्ट होता है कि राजपूत मूल रूप से प्राचीन क्षत्रियों के ही वंशज थे।

- उनकी परंपराएँ, धर्म, रीति-रिवाज, और राजवंशीय दावे प्राचीन क्षत्रिय परंपरा से जुड़े हुए हैं।
- विदेशी मूल सिद्धांत की कमजोरियाँ इसे प्रमाणित नहीं कर पातीं कि राजपूत गैर-भारतीय मूल के थे।
- अग्निकुंड सिद्धांत प्रतीकात्मक प्रतीत होता है, लेकिन यह भी क्षत्रिय मूल को ही इंगित करता है।

इस प्रकार, राजपूतों की उत्पत्ति प्राचीन वैदिक क्षत्रियों से हुई थी, और वे भारतीय सभ्यता में योद्धा वर्ग के रूप में प्रतिष्ठित रहे।